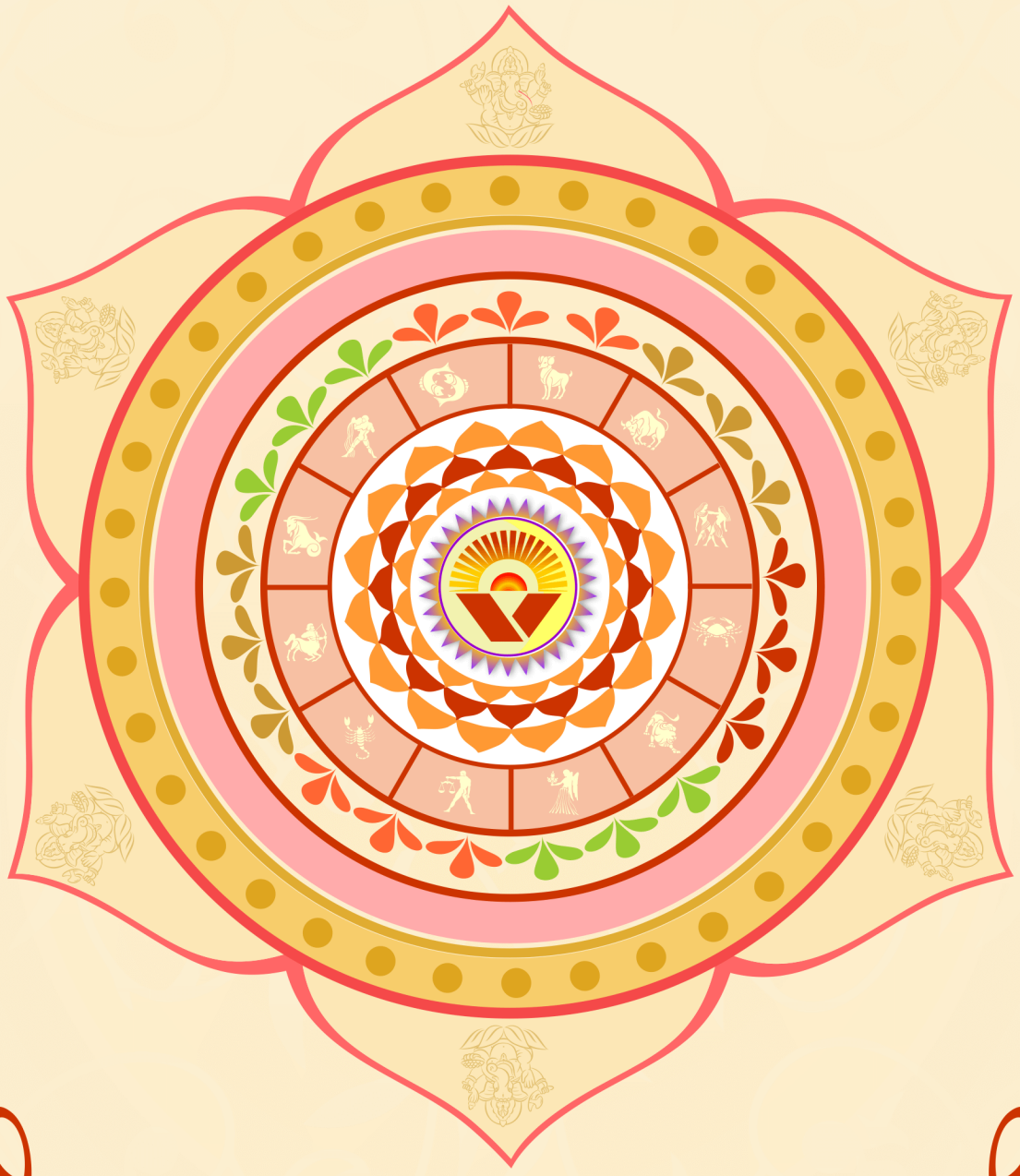

Name: Sample, DOB: 18:10:2005

TOB: 01:45:00, PLACE: Ballia ()

Mindsutra Software Technologies
www.mindsutra.com
Ph: 9818193410

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

जन्म दिनाकं	18:10:2005(मंगलवार)
जन्म समय	01:45:00
जन्म स्थान	Ballia
अक्षांश	025:45:00N
रेखांश	084:10:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00
जी. एम. टी. समय	020:15:00
स्थानीय समय	001:51:40 hrs
सांपातिक काल	027:37:22 hrs
स्थानीय समय संस्कार	000:06:40
अयनांश	N.C.Lahiri(023:56:16)
सूर्योदय	05:56:34AM
सूर्यास्त	05:20:38PM
विक्रम संवत	2062
शक संवत	1927
संवत्सर	पार्थिव
संवत्सर अधिपति	अग्नि

घात चक्र

राशि (सूर्य)	कुम्भ
मास	फाल्गुन
तिथि	5,10,15
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	अश्लेषा
प्रहर	4
लग्न	सिहं
सूर्य सिद्धान्त योग	वज्र
करण	चतुश्पद

अवकहड़ा चक्र

लग्न	सिहं
लग्नाधिपति	सूर्य
राशि (चन्द्रमा)	मेष
राशिपति	मंगल
नक्षत्र	अश्विनी
नक्षत्रपति	केतु
नक्षत्र चरण	2
ऋतु	बसन्त
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	प्रतिपदा
तिथि श्रेणी	नन्दा
तिथि पति	सूर्य
करण	बल्लव
करण श्रेणी	चर
करणपति	ब्रहमा
गण	देव
योनि	हस्त (स्त्री)
वर्ण	क्षत्रिय
सूर्य सिद्धान्त योग	हर्षण
रज्जु	पद
वश्य	चतुश्पद
तत्व	पृथ्वी
विहग	भारधंक
तत्वाधिपति	बुध
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	मध्य
वेध	ज्येष्ठा
आद्याक्षर	Chay
पाया	रजत

ग्रह स्थिती

लग्न कुण्डली

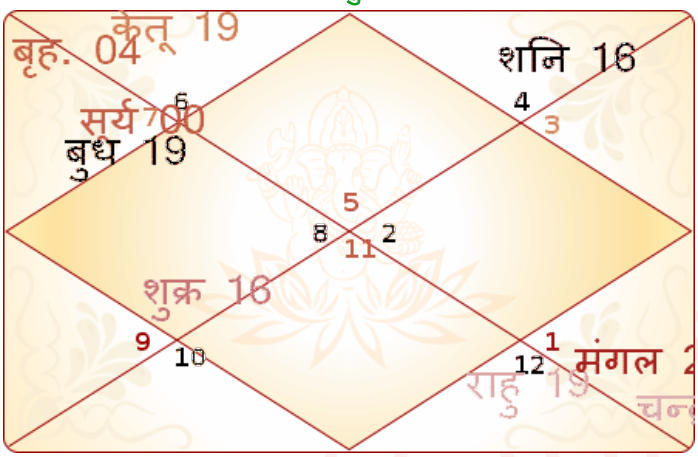

नवांमश कुण्डली

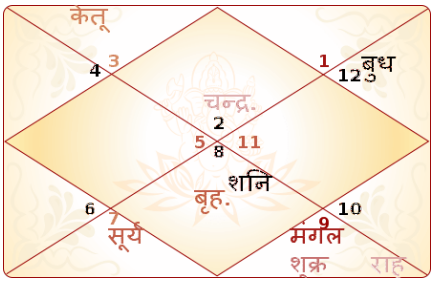

चन्द्र कुण्डली

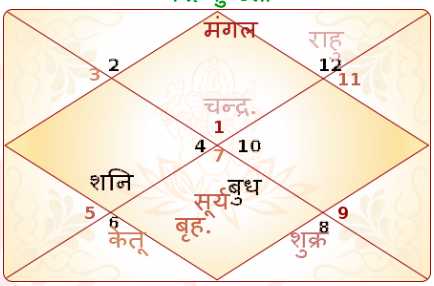

ग्रह स्थिती

ग्रह	राशि	अंश	गति	रा. पति	नक्षत्र	च.	न	न. पति	नवांश	नव. पति	विशेष
लग्न	सिहं	04:11:09	...	सूर्य	मघा	2	10	केतु	वृष	शुक्र	
सूर्य	तुला	00:37:09	00:59:32	शुक्र	चित्रा	3	14	मंगल	तुला	शुक्र	नीच राशि
चन्द्रमा	मेष	05:00:01	14:03:07	मंगल	अश्विनी	2	1	केतु	वृष	शुक्र	सम राशि
मंगल (व.)	मेष	27:34:06	00:13:41	मंगल	कृतिका	1	3	सूर्य	धनु	बृहस्पति	स्व राशि
बुध	तुला	19:34:33	01:25:19	शुक्र	स्वाति	4	15	राहु	मीन	बृहस्पति	मित्र राशि
बृहस्पति (ग्र.)	तुला	04:15:42	00:13:02	शुक्र	चित्रा	4	14	मंगल	वृश्चिक	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र	वृश्चिक	16:48:50	01:04:50	मंगल	ज्येष्ठा	1	18	बुध	धनु	बृहस्पति	सम राशि
शनि	कक्र	16:13:34	00:03:45	चन्द्रमा	पुष्य	4	8	शनि	वृश्चिक	मंगल	स्व नक्षत्र
राहु (व.)	मीन	19:02:17	00:03:10	बृहस्पति	रेवती	1	27	बुध	धनु	बृहस्पति	सम राशि
केतु (व.)	कन्या	19:02:17	00:03:10	बुध	हस्ता	3	13	चन्द्रमा	मिथुन	बुध	सम राशि
हर्षल (व.)	कुम्भ	13:15:10	00:01:22	शनि	शतभिषा	2	24	राहु	मकर	शनि	...
नेपच्यून (व.)	मकर	20:54:11	00:00:18	शनि	श्रवण	4	22	चन्द्रमा	कक्र	चन्द्रमा	...
प्लूटो	वृश्चिक	28:25:56	00:01:23	मंगल	ज्येष्ठा	4	18	बुध	मीन	बृहस्पति	...

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	..	56	241	263	75	60	103	342	225	45	189	167	114
सूर्य	304	..	184	207	19	4	46	286	168	348	133	110	58
चन्द्रमा	119	176	..	23	195	179	222	101	344	164	308	286	233
मंगल	97	153	337	..	172	157	199	79	321	141	286	263	211
बुध	285	341	165	188	..	345	27	267	149	329	114	91	39
बृहस्पति	300	356	181	203	15	..	43	282	165	345	129	107	54
शुक्र	257	314	138	161	333	317	..	239	122	302	86	64	12
शनि	18	74	259	281	93	78	121	..	243	63	207	185	132
राहु	135	192	16	39	211	195	238	117	..	180	324	302	249
केतु	315	12	196	219	31	15	58	297	180	..	144	122	69
हर्षल	171	227	52	74	246	231	274	153	36	216	..	338	285
नेपच्यून	193	250	74	97	269	253	296	175	58	238	22	..	308
प्लूटो	246	302	127	149	321	306	348	228	111	291	75	52	..

भाव स्फूट और कुण्डली

लग्न कुण्डली

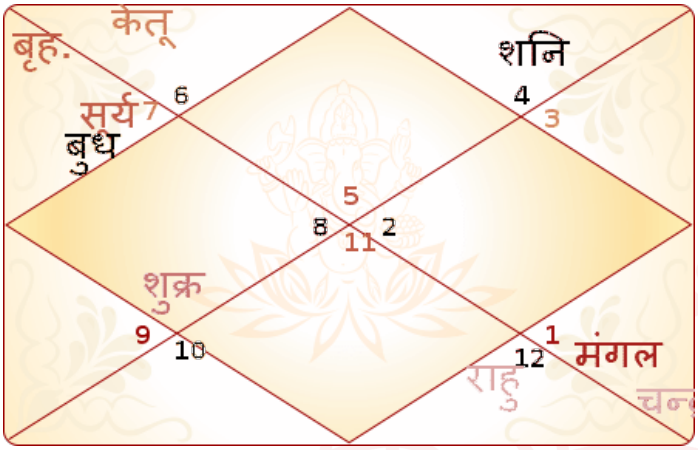

भाव कुण्डली

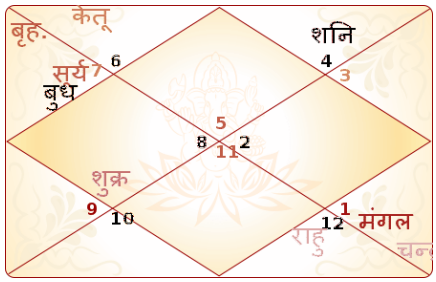

भाव चलित कुण्डली

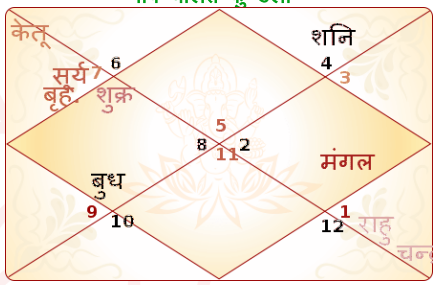

भाव सङ्ख्या	भाव मध्य			भाव विस्तार (आरम्भ——अन्त)		
1	सिहं	04:11:09	कर्क	18:56:23	सिहं	18:56:23
2	कन्या	03:41:38	सिहं	18:56:23	कन्या	18:26:52
3	तुला	03:12:06	कन्या	18:26:52	तुला	17:57:20
4	वृश्चिक	02:42:34	तुला	17:57:20	वृश्चिक	17:57:20
5	धनु	03:12:06	वृश्चिक	17:57:20	धनु	18:26:52
6	मकर	03:41:38	धनु	18:26:52	मकर	18:56:23
7	कुम्भ	04:11:09	मकर	18:56:23	कुम्भ	18:56:23
8	मीन	03:41:38	कुम्भ	18:56:23	मीन	18:26:52
9	मेष	03:12:06	मीन	18:26:52	मेष	17:57:20
10	वृष	02:42:34	मेष	17:57:20	वृष	17:57:20
11	मिथुन	03:12:06	वृष	17:57:20	मिथुन	18:26:52
12	कर्क	03:41:38	मिथुन	18:26:52	कर्क	18:56:23

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

भाव	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
I	56	241	263	75	60	103	342	225	45	189	167	114
II	27	211	234	46	31	73	313	195	15	160	137	85
III	357	182	204	16	1	44	283	166	346	130	108	55
IV	328	152	175	347	332	14	254	136	316	101	78	26
V	297	122	144	316	301	344	223	106	286	70	48	355
VI	267	91	114	286	271	313	193	75	255	40	17	325
VII	236	61	83	255	240	283	162	45	225	9	347	294
VIII	207	31	54	226	211	253	133	15	195	340	317	265
IX	177	2	24	196	181	224	103	346	166	310	288	235
X	148	332	355	167	152	194	74	316	136	281	258	206
XI	117	302	324	136	121	164	43	286	106	250	228	175
XII	87	271	294	106	91	133	13	255	75	220	197	145

मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	-----	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चन्द्रमा	मित्र	-----	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	-----	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	-----	सम	मित्र	सम	सम	सम
बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	-----	शत्रु	सम	मित्र	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	-----	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	-----	मित्र	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	-----	सम
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	-----

तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	-----	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
चन्द्रमा	शत्रु	-----	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	शत्रु	-----	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बृहस्पति	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	-----	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	-----	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----	शत्रु
केतु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	-----

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	....	सम	सम	शत्रु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	सम
चन्द्रमा	सम	....	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	सम	....	अधिशत्रु	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	....	शत्रु	अधिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बृहस्पति	सम	सम	सम	अधिशत्रु	....	सम	मित्र	सम	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	मित्र	....	सम	सम	अधिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अधिमित्र	मित्र	सम	....	सम	अधिमित्र
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	सम	सम	....	शत्रु
केतु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	शत्रु	....

षोडश वर्ग कुण्डली

होरा कुण्डली

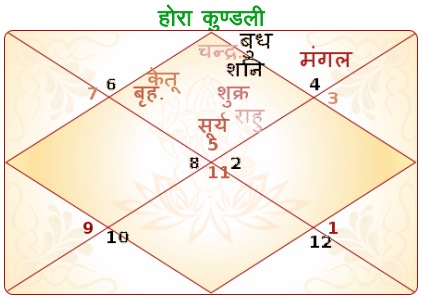

धन दौलत के लिए

द्रेष्काण कुण्डली

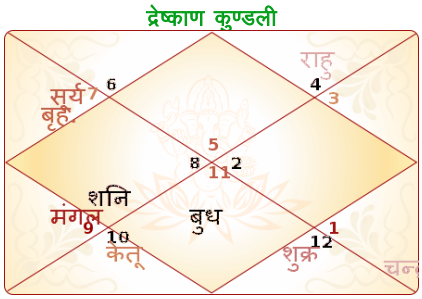

सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य

चतुर्थांश कुण्डली

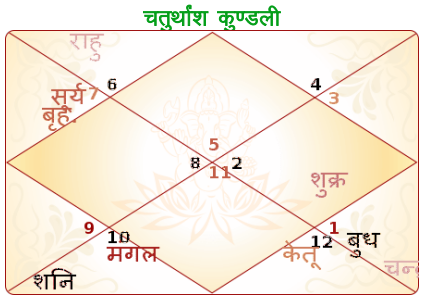

भाग्य और रिहायशी मकान

सप्तमांश कुण्डली

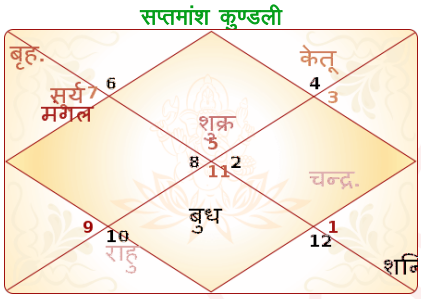

संतान और उनकी संतान

नवांश कुण्डली

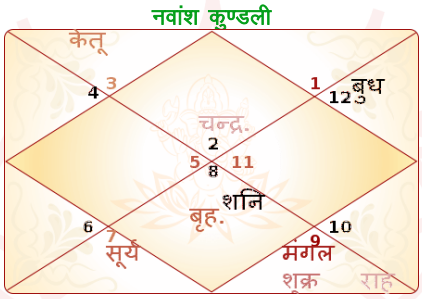

जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य

दसमांश कुण्डली

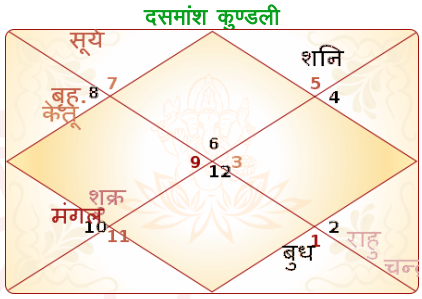

कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता

द्वादशांश कुण्डली

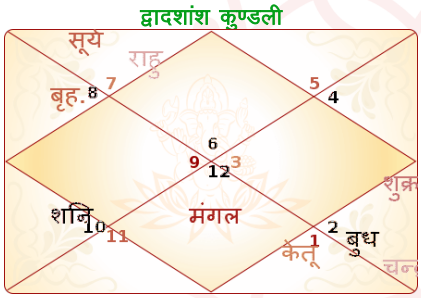

माता पिता का जीवन और उनका स्वास्थ्य

षोडशांश कुण्डली

वाहन से संबंधित बातें

विशांश कुण्डली

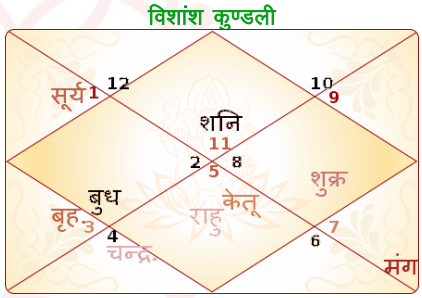

आध्यात्मिक रूझान

चर्तुविशांश कुण्डली

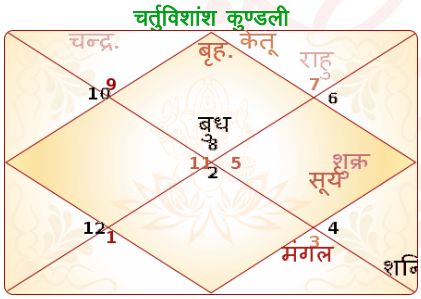

शिक्षा, ज्ञान और समझ

सप्तविशांश कुण्डली

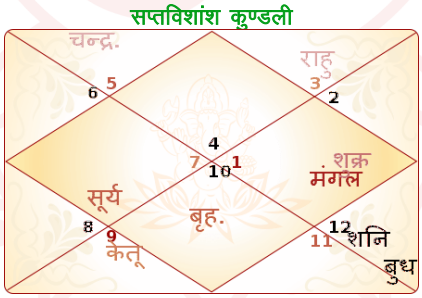

ताकत और दुर्बलता

त्रिशांश कुण्डली

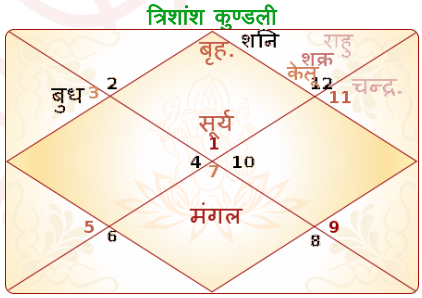

दरिद्रता, कठिनाईयाँ और दुर्गति

खवेदांश कुण्डली

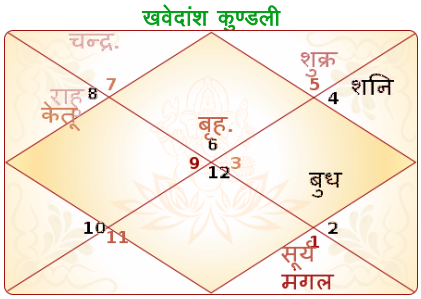

शुभ अशुभ घटनाँए

अक्षवेदांश कुण्डली

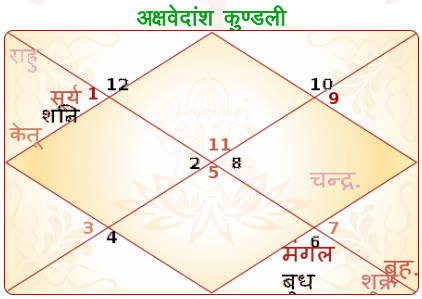

सभी मुद्दों के लिए

षष्टांश कुण्डली

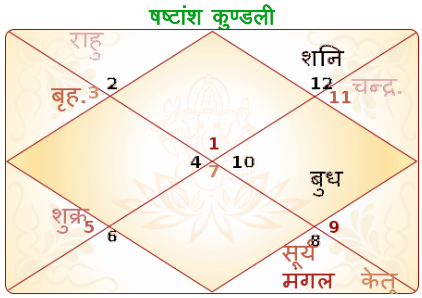

सभी मुद्दों के लिए

अष्टकवर्ग सारिणि

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VII I	
शनि	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
बृहस्पति	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
सूय	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
योग	2	4	4	2	5	6	3	3	1	3	3	3	39

बृहस्पति भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VII I	
शनि	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
बृहस्पति	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	8
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूय	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
चन्द्रमा	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	9
योग	5	5	4	5	6	3	5	6	6	5	4	2	56

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VII I	
शनि	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	7
बृहस्पति	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूय	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
बुध	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
योग	3	3	3	4	4	3	4	1	2	3	5	4	39

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VII I	
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
बृहस्पति	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूय	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
शुक्र	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	1	7
चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
लग्न	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
योग	4	5	5	5	4	2	5	3	2	5	5	3	48

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VII I	
शनि	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	7
बृहस्पति	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	5
मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
सूय	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	3
शुक्र	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	9
बुध	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	1	5
चन्द्रमा	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
योग	3	4	6	3	7	5	2	4	5	1	6	6	52

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VII I	
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
बृहस्पति	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूय	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	5
शुक्र	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
बुध	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	1	8
चन्द्रमा	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
योग	2	5	4	5	5	6	3	4	3	5	6	6	54

चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VII I	
शनि	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
बृहस्पति	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	7
सूय	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7

लग्न भिन्नाष्टक वग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VII I	
शनि	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	6
बृहस्पति	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
सूय	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7

बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	8
चन्द्रमा	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
योग	4	7	3	4	5	5	4	1	4	6	4	2	49

बुध	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
लग्न	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	4
योग	3	3	5	5	3	4	4	3	3	7	4	5	49

राहु भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	
शनि	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	0	6
बृहस्पति	0	1	0	0	0	0	1	0	1	1	0	1	5
मंगल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	0	0	1	5
सूय	1	1	0	1	0	0	1	1	1	0	1	0	7
शुक्र	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
बुध	1	1	0	0	0	1	0	1	0	1	0	0	5
चन्द्रमा	1	0	1	0	1	0	1	1	1	1	0	0	7
लग्न	1	0	0	1	0	0	1	1	1	0	0	0	5
योग	6	6	3	2	2	3	6	5	4	4	1	2	44

कक्ष बल													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	
शनि	5	7	1	4	2	5	5	4	4	3	4	4	48
बृहस्पति	3	4	3	5	8	4	3	2	1	3	4	5	45
मंगल	5	5	4	4	3	4	4	4	4	7	8	2	54
सूय	4	5	3	6	8	3	3	3	4	4	2	4	49
शुक्र	4	2	4	5	3	6	3	3	4	4	4	5	47
बुध	1	3	5	6	8	3	4	2	5	3	6	7	53
चन्द्रमा	2	3	6	2	2	6	2	2	2	4	8	2	41
लग्न	2	7	8	1	5	3	6	5	2	7	1	2	49
योग	26	36	34	33	39	34	30	25	26	35	37	31	386

सर्वाष्टक वर्ग से निष्कर्ष

सर्वाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कक्र	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	
शनि	2	4	4	2	5	6	3	3	1	3	3	3	39
बृहस्पति	5	5	4	5	6	3	5	6	6	5	4	2	56
मंगल	3	3	3	4	4	3	4	1	2	3	5	4	39
सूर्य	4	5	5	5	4	2	5	3	2	5	5	3	48
शुक	3	4	6	3	7	5	2	4	5	1	6	6	52
बुध	2	5	4	5	5	6	3	4	3	5	6	6	54
चन्द्रमा	4	7	3	4	5	5	4	1	4	6	4	2	49
योग	23	33	29	28	36	30	26	22	23	28	33	26	337
लग्न	3	3	5	5	3	4	4	3	3	7	4	5	49
राहु	6	6	3	2	2	3	6	5	4	4	1	2	44

तत्व चक्र

स व बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	82	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	91	दक्षिण
वाय त्रिकोन	84.25	88	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	76	उत्तर

विशेष – सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पू द प और उ) अगर दोनों भागों की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उ पू दपू उ प और पद) होगी।

भुवन चक

स व बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव राशि	112.33	124	मेहनत और लगन
पनफरा भाव राशि	112.33	108	आर्थिक स्थिति
अपक्लिम भाव राशि त्रिकोन	112.33	105	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	स व बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	112.33	82	बन्धु बान्धवों से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोण	112.33	91	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	112.33	88	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	112.33	76	दुर्भाग्य और हानि

सुदर्शन चक्र

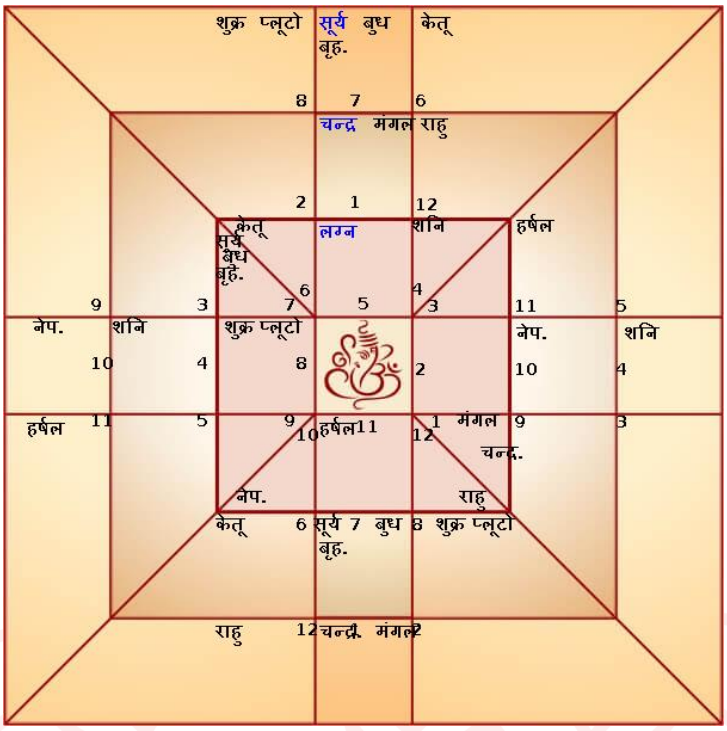

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (अयनाश : 023:56:16) चन्द्रमा 4.0 व.4.0 म.15 द.

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	केतु	4.0 y.4.0 m.15 d.	18:10:2005
2	शुक्र	20.0 y.0.0 m.0 d.	03:03:2010
3	सूर्य	6.0 y.0.0 m.0 d.	03:03:2030
4	चन्द्रमा	10.0 y.0.0 m.0 d.	03:03:2036
5	मंगल	7.0 y.0.0 m.0 d.	03:03:2046
6	राहु	18.0 y.0.0 m.0 d.	03:03:2053
7	बृहस्पति	16.0 y.0.0 m.0 d.	03:03:2071
8	शनि	19.0 y.0.0 m.0 d.	03:03:2087
9	बुध	17.0 y.0.0 m.0 d.	03:03:2106

केतु दशा

अन्तर्दशा	से
केतु	
शुक्र	
सूर्य	
चन्द्रमा	
मंगल	18:10:2005
राहु	01:02:2006
बृहस्पति	19:02:2007
शनि	26:01:2008
बुध	06:03:2009

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	03:03:2010
सूर्य	03:07:2013
चन्द्रमा	03:07:2014
मंगल	03:03:2016
राहु	03:05:2017
बृहस्पति	03:05:2020
शनि	02:01:2023
बुध	03:03:2026
केतु	02:01:2029

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	03:03:2030
चन्द्रमा	21:06:2030
मंगल	20:12:2030
राहु	27:04:2031
बृहस्पति	21:03:2032
शनि	08:01:2033
बुध	20:12:2033
केतु	27:10:2034
शुक्र	03:03:2035

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	03:03:2036
मंगल	02:01:2037
राहु	02:08:2037
बृहस्पति	01:02:2039
शनि	02:06:2040
बुध	02:01:2042
केतु	03:06:2043
शुक्र	02:01:2044
सूर्य	02:09:2045

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	03:03:2046
राहु	30:07:2046
बृहस्पति	18:08:2047
शनि	24:07:2048
बुध	02:09:2049
केतु	30:08:2050
शुक्र	26:01:2051
सूर्य	27:03:2052
चन्द्रमा	02:08:2052

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	03:03:2053
बृहस्पति	14:11:2055
शनि	09:04:2058
बुध	13:02:2061
केतु	02:09:2063
शुक्र	20:09:2064
सूर्य	20:09:2067
चन्द्रमा	14:08:2068
मंगल	13:02:2070

बृहस्पति दशा

अन्तर्दशा	से
बृहस्पति	03:03:2071
शनि	21:04:2073
बुध	02:11:2075
केतु	07:02:2078
शुक्र	14:01:2079
सूर्य	14:09:2081
चन्द्रमा	03:07:2082
मंगल	02:11:2083
राहु	08:10:2084

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	03:03:2087
बुध	06:03:2090
केतु	14:11:2092
शुक्र	23:12:2093
सूर्य	22:02:2097
चन्द्रमा	04:02:2098
मंगल	05:09:2099
राहु	14:10:2100
बृहस्पति	21:08:2103

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	03:03:2106
केतु	30:07:2108
शुक्र	27:07:2109
सूर्य	27:05:2112
चन्द्रमा	03:04:2113
मंगल	02:09:2114
राहु	30:08:2115
बृहस्पति	19:03:2118
शनि	23:06:2120

शुक्र ग्रह दशा

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	03:03:2010
सूर्य	22:09:2010
चन्द्रमा	22:11:2010
मंगल	03:03:2011
राहु	13:05:2011
बृहस्पति	12:11:2011
शनि	22:04:2012
बुध	02:11:2012
केतु	23:04:2013

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	03:07:2013
चन्द्रमा	21:07:2013
मंगल	21:08:2013
राहु	11:09:2013
बृहस्पति	05:11:2013
शनि	23:12:2013
बुध	19:02:2014
केतु	12:04:2014
शुक्र	03:05:2014

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	03:07:2014
मंगल	23:08:2014
राहु	27:09:2014
बृहस्पति	27:12:2014
शनि	19:03:2015
बुध	23:06:2015
केतु	17:09:2015
शुक्र	23:10:2015
सूर्य	01:02:2016

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	03:03:2016
राहु	27:03:2016
बृहस्पति	30:05:2016
शनि	26:07:2016
बुध	02:10:2016
केतु	02:12:2016
शुक्र	26:12:2016
सूर्य	07:03:2017
चन्द्रमा	29:03:2017

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	03:05:2017
बृहस्पति	14:10:2017
शनि	09:03:2018
बुध	30:08:2018
केतु	01:02:2019
शुक्र	06:04:2019
सूर्य	05:10:2019
चन्द्रमा	29:11:2019
मंगल	28:02:2020

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	03:05:2020
शनि	10:09:2020
बुध	11:02:2021
केतु	29:06:2021
शुक्र	25:08:2021
सूर्य	03:02:2022
चन्द्रमा	24:03:2022
मंगल	13:06:2022
राहु	09:08:2022

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	02:01:2023
बुध	04:07:2023
केतु	14:12:2023
शुक्र	20:02:2024
सूर्य	31:08:2024
चन्द्रमा	28:10:2024
मंगल	01:02:2025
राहु	10:04:2025
बृहस्पति	30:09:2025

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	03:03:2026
केतु	28:07:2026
शुक्र	26:09:2026
सूर्य	18:03:2027
चन्द्रमा	08:05:2027
मंगल	02:08:2027
राहु	02:10:2027
बृहस्पति	05:03:2028
शनि	21:07:2028

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	02:01:2029
शुक्र	26:01:2029
सूर्य	07:04:2029
चन्द्रमा	29:04:2029
मंगल	03:06:2029
राहु	28:06:2029
बृहस्पति	31:08:2029
शनि	27:10:2029
बुध	02:01:2030

अष्टोत्तरी दशा

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का क्रितिकादी सिद्धान्त प्रभावी हो रहा है।

ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से	समय
शुक(अश्विनी)	3.0 y.3.0 m.12 d.	18:10:2005	035:51:07
शुक(भरणी)	5.0 y.3.0 m.0 d.	28:01:2009	093:37:40
सूर्य(कृतिका)	2.0 y.0.0 m.0 d.	29:04:2014	001:14:18
सूर्य(रोहिणी)	2.0 y.0.0 m.0 d.	29:04:2016	185:37:10
सूर्य(मृगशिरा)	2.0 y.0.0 m.0 d.	29:04:2018	208:11:15
चन्द्रमा(अरिद्रा)	3.0 y.9.0 m.0 d.	29:04:2020	354:02:18
चन्द्रमा(पुनर्वस)	3.0 y.9.0 m.0 d.	28:01:2024	189:15:44
चन्द्रमा(पुष्य)	3.0 y.9.0 m.0 d.	29:10:2027	111:13:35
चन्द्रमा(अश्लेषा)	3.0 y.9.0 m.0 d.	30:07:2031	204:34:35
मंगल(मघा)	2.0 y.8.0 m.1 d.	29:04:2035	196:36:23
मंगल(पुर्वफाल्गुनी)	2.0 y.8.0 m.1 d.	29:12:2037	254:22:56
मंगल(उत्तरफाल्गुनी)	2.0 y.8.0 m.1 d.	29:08:2040	208:11:15
बुध(हस्ता)	4.0 y.3.0 m.0 d.	29:04:2043	204:34:35
बुध(चित्रा)	4.0 y.3.0 m.0 d.	30:07:2047	227:08:39
बुध(स्वाति)	4.0 y.3.0 m.0 d.	29:10:2051	188:36:51
बुध(विशाखा)	4.0 y.3.0 m.0 d.	28:01:2056	023:50:16
शनि(अनुराधा)	3.0 y.4.0 m.1 d.	29:04:2060	212:27:08
शनि(ज्येष्ठा)	3.0 y.4.0 m.1 d.	29:08:2063	305:48:08
शनि(मूला)	3.0 y.4.0 m.1 d.	29:12:2066	275:15:51
बृहस्पति(पूर्वाषाढ़)	4.0 y.9.0 m.0 d.	29:04:2070	051:04:33
बृहस्पति(उत्तराषाढ़)	4.0 y.9.0 m.0 d.	28:01:2075	004:52:51
बृहस्पति(अभिजीत)	4.0 y.9.0 m.0 d.	29:10:2079	004:52:51
बृहस्पति(श्रवण)	4.0 y.9.0 m.0 d.	29:07:2084	189:15:44
राहु(धनिष्ठा)	4.0 y.0.0 m.0 d.	29:04:2089	016:36:23
राहु(शतभिषा)	4.0 y.0.0 m.0 d.	29:04:2093	338:03:34
राहु(पूर्वाभाद)	4.0 y.0.0 m.0 d.	29:04:2097	173:18:00
शुक(उत्तरभाद्र)	5.0 y.3.0 m.0 d.	29:04:2101	333:02:24

योगिनी दशा

ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से–	सिद्धी बिन्दु
भ्रमरि (मंगल)(अश्विनी)	2.0 y.6.0 m.0 d.	18:10:2005	196:36:23
भद्रिका (बुध)(भरणी)	5.0 y.0.0 m.0 d.	17:04:2008	066:23:24
उल्का (शनि)(कृतिका)	6.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2013	286:50:43
सिद्धा (शुक्र)(रोहिणी)	7.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2019	231:48:51
संकटा (शनि)(मृगशिरा)	8.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2026	016:36:23
मंगला(चन्द्रमा)(अरिद्रा)	1.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2034	354:02:18
पिगंला (सूर्य)(पुनर्वसु)	2.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2035	004:52:51
धान्य (वृहस्पति)(पु)	3.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2037	290:29:17
भ्रमरि (मंगल)(अश्लेा)	4.0 y.0.0 m.0 d.	17:04:2040	227:08:39
भद्रिका (बुध)(मघा)	5.0 y.0.0 m.0 d.	17:04:2044	008:36:51
उल्का (शनि)(पुर्वफाल्गुनी)	6.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2049	333:02:24
सिद्धा (शुक्र)(उत्तरफाल्गुनी)	7.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2055	047:25:59
संकटा (शनि)(हस्ता)	8.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2062	354:02:18
मंगला(चन्द्रमा)(चित्रा)	1.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2070	032:34:07
पिगंला (सूर्य)(स्वाति)	2.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2071	169:39:26
धान्य (वृहस्पति)(विशाखा)	3.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2073	008:31:25
भ्रमरि (मंगल)(अनुराधा)	4.0 y.0.0 m.0 d.	17:04:2076	133:47:40
भद्रिका (बुध)(ज्येश्ठा)	5.0 y.0.0 m.0 d.	17:04:2080	039:09:07
उल्का (शनि)(मूला)	6.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2085	275:15:51
सिद्धा (शुक्र)(पूर्वाशाढ़)	7.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2091	093:37:40
संकटा (शनि)(उत्तराशाढ़)	8.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2098	169:39:26
मंगला(चन्द्रमा)(श्रवण)	1.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2106	010:00:03
पिगंला (सूर्य)(धनिश्ठा)	2.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2107	208:11:15
धान्य (वृहस्पति)(शतभिशा)	3.0 y.0.0 m.0 d.	18:04:2109	173:18:00

जातक से संबंधित सामान्य भविष्यफल

सामान्य जानकारी :–

आपकी लग्न राशि सिंह है, जिसका स्वामी सूर्य है। चूंकि सूर्य सभी ग्रहों में प्रधान ग्रह माना जाता है, अतः आपकी जीवन शैली भी एक राजा की तरह होगी। आपमें नेतृत्व की क्षमता होगी। यह एक आग्नेय, स्थिर या गंभीर राशि है। विशेषतः यह नीरस तथा निर्दय राशि है। आप शक्ति और ऊर्जा से भरपूर होंगे। आपका व्यक्तित्व चमत्कारी होगा।

आप दृढ़निश्चयी, गर्वित एवं निडर छवि के होंगे तथा विचारों तथा जीवन से धनवान होंगे। आप अन्तर्मुखी और दूसरों से सहानूभूति रखने वाले होंगे, लेकिन शत्रुओं के लिए आपके हृदय में कोई दया नहीं हो सकती हैं, उनके प्रति आप आक्रामक होंगे। आप महत्वाकांक्षी, ऐश्वर्यवान तथा उदार होंगे। आप कला, साहित्य एवं संगीत के प्रेमी होंगे। आप रूढ़िवादी होंगे और परम्पराओं को महत्व देंगे। आप आत्मविश्वासी होंगे और नई परिस्थितियो में सामंजस्य बैठाने में सक्षम होंगे। आप अपने कार्यों में सफलता सहज ही प्राप्त करने में सफल होंगे।

आप एक सिंह की भांति स्वतंत्रताप्रिय होंगे और किसी के अधीन होकर नहीं रहना चाहेंगे। बाध्यताओं और बंधनों को आप बिल्कुल पसन्द नहीं करेंगे। आप ईमानदार, सत्यवादी एवं न्यायप्रिय होंगे। जो लोग आपको कष्ट देंगे, उन्हें उनके किये गये कार्यों को भुलाकर आप क्षमा कर देंगे, अर्थात् आप क्षमाशील होंगे। आपको विभिन्न विषयों के पठन में रूचि होगी। आप सकारात्मक विचारों वाले होंगे। जीवन को साधारण दृष्टि से देखने के बजाय उसके प्रति आपका दृष्टिकोण आध्यात्मिक और दार्शनिक होगा। ईश्वर के प्रति आपके हृदय में सम्मान और श्रद्धा होगी और आप उसके अस्तित्व में विश्वास करेंगे, इस कारण आप अनैतिक और पाप के कामों से दूर रहेंगे। आपमें न तो किसी के प्रति वैर भावना होगी और न ही आपको किसी से ईर्ष्या होगी।

आपको पहाड़, जंगल आदि बहुत पसन्द होंगे। आप किसी भी तरह की पार्टी एवं मण्डली के विरोधी होंगे। आप बहुत उदार एवं शालीन होंगे। आप आशावादी, ऊँचे विचार एवं शत्रु को भुलाने वाले होंगे। आप स्वभाव से गंभीर तथा संकल्पित छवि के होंगे तथा वादे निभाने वाले होंगे। अपने इन विशिष्ट गुणों के कारण, आप लोगों को झुका देंगे तथा अधिकारों एवं शक्तिशाली लोगों को भी अपनी तरफ आकर्षित करेंगे। आप विश्वासी और कोमल हृदय वाले होंगे, जिससे लोग आपका आदर करेंगे।

मानसिक स्थिति :–

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा मेष राशि में स्थित है, जो मंगल द्वारा संचालित होता है। यह चलायमान और आग्नेय राशि है। आप संवेगी, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर तथा आशावादी होंगे। आप उग्र तथा आतंकी स्वभाव के हो सकते हैं। आप बहुत अधिक आज्ञाकारी नहीं होंगे तथा परम्परा और रीति–रिवाजों को अधिक महत्व देंगे। आप परिवर्तनशील

एवं चंचल हो सकते हैं तथा आप धैर्यवान नहीं होंगे। आपका स्वभाव चिड़चिड़ा होगा और आप जल्द गुस्सा हो जायेंगे। आप दूसरों के द्वारा दी गयी सलाह नहीं मानेंगे और सदा अपने विचारों को मान्यता देंगे।

आप बहुत अधिक प्रसिद्धि पायेंगे और आपके बहुत प्रशंसक और मित्र होंगे। आपमें दूसरों में जागरूकता लाने की क्षमता होगी, जिससे आप बहुत लोगों को अपने नियंत्रण में रख सकते हैं। अपने विशिष्ठ गुणों के कारण आप जल्दी ही पहचान बनायेंगे तथा आप किसी विभाग, कार्यालय या उपक्रम के अध्यक्ष बन सकते हैं। यदि अपने कार्य स्थल पर आपको विशेष अधिकार प्राप्त नहीं हैं, तो आप अपने लिए जल्द ही नए रास्तों की तलाश कर लेंगे। छोटी आयु में ही आप बढ़िया स्थिति प्राप्त कर लेंगे। आपको किसी पार्टी की सदस्यता पसन्द नहीं होगी। आपके व्यवसाय में कुछ गोपनीयता हो सकती है। रहस्यपूर्ण विषय आपको आकर्षित करेंगे तथा इनसे सम्बन्धित विषयों के अध्ययन में दिलचस्पी होगी।

आपमें अदभुत जीवन शक्ति होगी। लेकिन आप निरन्तर कुछ छोटी–मोटी दुर्घटनाओं का सामना कर सकते हैं। बचपन में किसी दुर्घटना के फलस्वरूप आपके सिर या चेहरे पर निशान हो सकता है। आपको कुछ अधिक गर्मी महसूस हो सकती है या बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। आप महिला समुदाय के प्रति आकर्षित होंगे और छोटी उम्र में ही आपके द्वारा पसन्द किये गये व्यक्ति से आपका विवाह हो सकता है। आपको बच्चों से लगाव होगा और आपकी पहली संतान आपकी आंखों का तारा होगी। अगर आपकी कुण्डली में कोई प्रभावशाली ग्रह नहीं है तो माता–पिता में से किसी एक के साथ आपके गहरे मतभेद हो सकते हैं और किशोरावस्था में ही परिस्थितिवश उनसे अलग हो सकते हैं।

शारीरिक संरचना :–

सूर्य की प्रधानता के कारण आपका व्यक्तित्व राजसी होगा। आपकी रंगत लालिमायुक्त होगी। आप आकर्षक एवं गठे शरीर वाले, मध्यम कद, अण्डाकार चेहरा एवं चौड़े कंधे वाले होंगे। आपकी हंसमुख छवि आपको आकर्षण का केन्द्र बनाएगी। आपकी चाल तेज होगी। आप बहुत वाचाल नहीं होंगे, अर्थात आप अपनी बातचीत में नपे–तुले शब्दों का प्रयोग करेंगे।

गुण :–

आपके कार्य और विचार रचनात्मक होंगे और उनमें कला की झलक होगी। अपनी अन्तर्निहित ऊर्जा के कारण आप सक्रिय और स्फूर्तिवान होंगे। सिंह की भांति आप किसी चीज से न डरने वाले और साहसी होंगे। आप उदार एवं खुशमिजाज होंगे। अपने बेहतरीन प्रबंधन कौशल के कारण चीजों को व्यवस्थित करने में आप दक्ष होंगे। आप गंभीर एवं संवेदनशील होंगे। अपने मित्रों तथा रिश्तेदारों से आपको प्रेम होगा, आप उनको महत्व देंगे तथा उनका ख्याल रखेंगे।

अवगुण :–

आपकी सहन शक्ति कमजोर हो सकती है। आप छोटी–छोटी बातों पर भी गुस्सा कर सकते हैं। आप किसी से न डरने वाले, घमंडी या अहंकारी हो सकते हैं। आप दूसरों पर अपनी मर्जी थोपने वाले हो सकते हैं। आपको कोई आदेश दे, यह आपको पसन्द नहीं हो सकता है।

विशेष लक्षण :–

1– अपने खुल दिमाग और विचारों तथा परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बिठाने की प्रवृति के कारण आप समाज के हर वर्ग के लोगों, चाहे वे ऊँचे या निम्न तबके के हों, के साथ आप आसानी से घुल–मिल सकते हैं। आप उदार होंगे।

2– आप उत्तम कामों एवं कर्मियों की हमेशा प्रशंसा करेंगे और दूसरों से भी उम्मीद करेंगे की किसी की उपलब्धियों के लिए उसकी सराहना करेंगे।

3– आप पुरानी पारिवारिक परम्पराओं को बनाए रखने में विश्वास करेंगे। कभी–कभी यह आपके परिवार में अप्रसन्नता का कारण बन सकती है।

शुभ एवं अशुभ ग्रह :–

1– अपने खुल दिमाग और विचारों तथा परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बिठाने की प्रवृति के कारण आप समाज के हर वर्ग के लोगों, चाहे वे ऊँचे या निम्न तबके के हों, के साथ आप आसानी से घुल–मिल सकते हैं। आप उदार होंगे।

2– आप उत्तम कामों एवं कर्मियों की हमेशा प्रशंसा करेंगे और दूसरों से भी उम्मीद करेंगे की किसी की उपलब्धियों के लिए उसकी सराहना करेंगे।

3– आप पुरानी पारिवारिक परम्पराओं को बनाए रखने में विश्वास करेंगे। कभी–कभी यह आपके परिवार में अप्रसन्नता का कारण बन सकती है।

4– चौथे एवं नौवें भाव का स्वामी होने के कारण मंगल काफी शुभ एवं योग कारक होगा। सूर्य लग्न स्वामी होने के कारण काफी शुभ होगा। करेंगे।

5– चन्द्रमा, बृहस्पति एवं शनि तटस्थ होंगे। करेंगे।

6– बुध एवं शुक्र अशुभ होंगे। करेंगे।

7– बृहस्पति आठवें भाव का स्वामी होने के कारण मारक या घातक हो सकता है। करेंगे।

8– शनि छठे तथा सातवें भाव का स्वामी होने से काफी अशुभ एवं मारक होगा।

रोजगार :–

आप किसी विभाग में ऊँचे पद पर हो सकते हैं। आप कोई राजनीतिक नेता, वरिष्ठ अधिकारी, प्रबन्धक या

राजदूत हो सकते हैं। आप विज्ञान या तकनीकी सम्बन्धी किसी अनुसंधान वाले कार्यों में भी संलग्न हो सकते हैं। आपको संगमरमर, लकड़ी आदि से काफी लाभ प्राप्त हो सकता है या जौहरी, भूगर्भशास्त्री, शिक्षक, अभिनेता या कलाकार के रूप में काफी नाम तथा यश अर्जित कर सकते हैं।

सिंह लग्न वाले कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति :–

आदित्य बिड़ला – उद्योगपति, इन्दर नाथ बनर्जी – वकील, जी बनर्जी – न्यायाधीश , सनत जयसूर्या – क्रिकेटर, ज्योति बसु – राजनेता, गुरूनानक देव – संत, रजनीकान्त – अभिनेता, श्री निक्सन – राष्ट्रपति अमेरिका।

विभिन्न ज्योतिष कारकों का फल

जन्म कालिक ब्राहस्पत्य (संवत्सर) का फल :

आपका जन्म पार्थिव संवत्सर में हुआ है।जैसाकि नाम से प्रदर्शित होता है, कि आप जमीन से जुड़े एक साधारण और बहुत व्यावहारिक दृष्टिकोण एवं संवेदनशील प्रकृति के व्यक्ति होंगे। आप में धारणाओं और विचारों, आवश्यकता और मोहक लालसाओं, वास्तविक और कल्पना आदि के बीच अन्तर करने की एक विकसित भावना होगी। आप बुद्धिमान होंगे और रूचि के विभिन्न विषयों के ज्ञानी होंगे। आप ललित कला की किसी विधा में दक्ष या कुशल हो सकते हैं। स्वीकार्य सामाजिक रीति–रिवाजों और परम्परागत धार्मिक मान्यताओं के प्रति आपमें सम्मान की भावना होगी। सुनहरी आशाओं के पीछे भागने की बजाय आप स्वयं को किसी फलदायक कार्य में संलग्न रखेंगे और अपने भविष्य का निर्माण करेंगे।

जन्म कालिक सौर अयन का फल :

आपका जन्म सूर्य के दक्षिणायन (यमयायन) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आप कुछ हद तक दम्भी और हठी प्रकृति या असहिष्णु स्वभाव वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप कठोर हृदय वाले या कपटी हो सकते हैं। आप कृषि कार्यों और/या मवेशियों के पालन से अपनी जीविकोपार्जन कर सकते हैं। साथ ही, आप कुछ ऐसे कार्यों को करने में संलग्न हो सकते हैं, जहां आपके द्वारा किए गए कार्यों की अपेक्षा आपको प्राप्त होने वाला पारिश्रमिक बिल्कुल भी सामंजस्यपूर्ण नहीं हो सकता है।

जन्म कालिक ऋतु का फल :

आपका जन्म शरद ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आपकी शारीरिक संरचना वातमय प्रकृति की हो सकती है– जिसके कारण आप अस्थिर मन और शीघ्र क्रोधित होने वाली प्रवृत्ति के हो सकते हैं। आप साहस और शक्ति की प्रतिमूर्ति होंगे और युद्ध आदि में जीत प्राप्त करने की आपमें एक प्रबल चाह विद्यमान होगी। आप अपने स्वयं के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए स्वयं के कार्य पर ध्यान देंगे, उत्तम मात्रा में धन संग्रह करेंगे और कई मूल्यवान वस्तुएं प्राप्त करेंगे। आप एक शुद्ध हृदय वाले व्यक्ति होंगे और सामान्य लोग आपके साथ आदर व सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

जन्म कालिक मास का फल :

आपका जन्म कार्तिक मास (अक्टूबर/नवम्बर) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली मे कुछ प्रतिकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल हैं। आप आकर्षक मुख, मनोहारी बर्ताव और सौम्य स्वभाव से सम्पन्न होंगे। आप असामान्य रूप से बातूनी प्रकृति के हो सकते हैं, लेकिन यह विशेष विषम गुण आपके लिए लाभकारी साबित हो सकता है– जो आपको अपने व्यवसाय के क्षेत्र में असाधारण रूप से सफल बना सकता है। अपने स्वाभाविक रूझान के संदर्भ में आप खुदरा या बिक्री व विपणन के क्षेत्र में उत्तम कार्य कर सकते हैं। यद्यपि आप कुछ हद

तक कामुक हो सकते हैं, फिर भी आप आकर्षक लुभावने चीजों का प्रतिरोध करने में सक्षम होंगे। कुछ प्रशंसनीय और उत्तम कार्यों को करने के कारण आपकी प्रतिष्ठा और सम्मान में हमेशा बढ़ोत्तरी होगी।

जन्म कालिक पक्ष का फल :

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी शारीरिक संरचना कुछ–कुछ कमजोर हो सकती है और आप आसानी से रोगादि से ग्रसित हो सकती हैं। आप चंचल प्रकृति और अस्थिर स्वभाव वाली हो सकती हैं। आप पर शरारती और/या झगड़ालु होने की छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक प्रकृति की हो सकती हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना ही आप राई को पहाड़ बना सकती हैं।

जैसाकि आपकी कुण्डली में अति शुभ ग्रह बृहस्पति की चंद्रमा के साथ युति है (या इस पर उसकी दृष्टि पड़ रही है), आपमें मानसिक शांति और मिजाज की समानता विद्यमान होगी। आप खुले विचारों के साथ–साथ स्पष्टवादी प्रकृति, आशावादी दृष्टिकोण और परोपकारी स्वभाव की महिला होंगी। आर्थिक रूप से आप काफी सम्पन्न होंगी और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा विस्तृत होगा। आप सदैव स्वयं निर्णय करने की स्थिति में होंगी और आपके दायरे के लोग कुछ महत्वपूर्ण मामलों में आपकी कीमती राय या सलाह ले सकते हैं।

जैसाकि आपकी कुण्डली में शनि की चंद्रमा के साथ युति है (या इस पर उसकी दृष्टि पड़ रही है), आप विचारशील महिला होंगी और प्रायः विचारमग्न मुद्रा में रहेंगी। आप धैर्य व दृढ़ता की प्रतिमूर्ति होंगी एवं उस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करेंगी, जहां बहुत अधिक एकाग्रता की जरूरत है। आप किसी उत्तम प्रयोजन के लिए कार्य कर सकती हैं और भारी उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकती हैं। आपके जीवन में घटने वाली कुछ घटनाएं आपको व्यथित कर सकती हैं, आपके मस्तिष्क को खालीपन से भर सकती हैं और आपमें उदासीन दृष्टिकोण पैदा कर सकती हैं।

जैसाकि आपकी कुण्डली में मंगल की चंद्रमा के साथ युति है (या इस पर उसकी दृष्टि पड़ रही है), आपका शरीर भारी व मांसल तथा स्वभाव शीघ्र क्रोधित होने वाला होगा। यद्यपि सामान्यतः आप उल्लासित रहेंगी, फिर भी यदि आपको कोई ठेस पहुंचेगी या आपके हित दांव पर होंगे, तो आप क्रोधित हो सकती हैं। आप रक्त या रक्त–चाप से संबंधित किसी बीमारी से ग्रसित हो सकती हैं। आप सांसारिक मामलों और भौतिक अधिग्रहणों में लीन रह सकती हैं। संपत्ति से संबंधित मामलों में आप किसी विवाद में फंस सकती हैं– जो मुकदमे को जन्म दे सकता है।

जन्म कालिक वार का फल :

आपका जन्म सोमवार को हुआ है। दिवसपति चंद्रमा की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्वपूर्ण है। इसका फल– भाव में इसकी स्थिति के अनुसार– और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। सामान्यतः अन्य सारे संकेत अनुकूल हैं। आप शांत स्वभाव के ज्ञानी व्यक्ति होंगे– इसके अतिरिक्त मृदुभाषी व स्थिर चित्त वाले होंगे। बाहरी स्थिति में परिवर्तन के बाद भी आप सुव्यवस्थित/अनुद्विग्न रहेंगे एवं अपने उद्देश्यों की पूर्ति का मार्ग आपको ज्ञात होगा। आप बहुत लोकप्रिय होंगे एवं अधिकारियों से अनेक प्रत्यक्ष समर्थन और अप्रत्यक्ष लाभ का आनन्द लेंगे।

दिन या रात के जन्म का फल :

आपका जन्म रात्रि के समय में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप कुछ हद तक आलसी हो सकते हैं और आपको दिन में सोने का शौक हो सकता है। आप कुछ–कुछ गोपनीय प्रकृति के हो सकते हैं और आप अपनी कुछ इच्छायें या उद्देश्य गुप्त रखना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप थोड़े कामुक भी हो सकते हैं– जिसकी वजह से आप अपने जीवनसाथी से दबे हो सकते हैं। आप सक्रिय, उर्जावान, आशावादी और उत्साह से परिपूर्ण होंगे।

जन्म कालिक सूर्य सिद्धान्त योग का फल :

सूर्य–सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म हर्षन योग में हुआ है। यह योग अनुकूल श्रेणी से संबंध रखता है। इस योग में जन्म होने के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। जैसाकि नाम से प्रदर्शित होता है, कि आप शुभता की प्रभामण्डल से युक्त होंगे और सदैव प्रसन्नचित्त मुद्रा में रहेंगे। आपका धार्मिक रूझान उत्कृष्ट होगा, आप प्रवचन या उत्साहपूर्ण भाषण सुनेंगे, पारम्परिक रिवाजों का नियमित रूप से अवलोकन करेंगे और बहुत ही रूचि व प्रसन्नता के साथ प्राचीन पवित्र धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करेंगे।

जन्म कालिक तिथि का फल :

आपका जन्म प्रतिपदा या पहली तिथि को हुआ है। विद्वान होने व निर्णय की शक्ति से सम्पन्न होने के अतिरिक्त, आप सुन्दर व्यक्तित्व और उत्तम नैतिक चरित्र वाले भी होंगे। आप धनवान होंगे एवं ऊँचे तबके के लोगों से आपको सम्मान मिलेगा। आपका परिवार बड़ा हो सकता है और आपकी आय पर्याप्त नहीं हो सकती है– जैसाकि आपके वांछित गुणों का नाश हो सकता है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान दांव पर लग सकते हैं एवं आपकी लोकप्रियता कम हो सकती है।

जन्म कालिक करन का फल :

आपका जन्म बलव करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का दूसरा करन है। आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप स्वस्थ्य शारीरिक संरचना, आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर स्वरूप वाले होंगे। इसके अतिरिक्त, आप बुद्धिमान, ज्ञानी और विभिन्न विषयों में निपुण होंगे। आप ललित कलाओं की किसी शाखा में कुछ प्रवीणता हासिल कर सकते हैं। धन व सम्पदा के मामलें में आप भाग्यवान होंगे और सदैव अपने रिश्तेदारों, मित्रों व शुभचिन्तकों से घिरे रहेंगे। आप कामुक प्रकृति के हो सकते हैं और आपके किसी अन्तरंग संबंध का खुलासा हो जाने के कारण आपके प्रतिष्ठित व्यक्तित्व पर धब्बे लग सकते हैं।

जन्म कालिक नक्षत्र का फल :

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा अश्विनी नक्षत्र में स्थित है। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप आकर्षक

व्यक्तित्व और मनोहारी बर्ताव से सम्पन्न होने के साथ–साथ उदार व विनम्र महिला होंगी। आपको आधुनिक परिधानों और नीजि सजावट की वस्तुओं का शौक होगा। आप बहुत बुद्धिमान, शिक्षित, ज्ञानी और अपने कार्य में कुशल होंगी, किन्तु काफी सौम्य या डरे हुए स्वभाव के होने के कारण, आप दूसरों की सेवा/नौकरी में रह सकती हैं एवं आपकी उन्नति की संभावना अपेक्षाकृत धीमी हो सकती है। आप अपने जीवनसाथी और संतान के संबंध में भाग्यशाली होंगी एवं आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण और खुशहाल होगा। सामाजिक रूप से आप अपने खुले स्वभाव, विनम्र व्यवहार और उदार प्रवृत्ति के लिए लोकप्रिय होंगी।

जन्म कालिक लग्न का फल :

आपका जन्म सिंह लग्न में हुआ है। यह राशिचक्र की पांचवीं राशि है। संरचनात्मक रूप से यह एक अग्नितत्व की स्थिर राशि है– शासित ग्रह सूर्य की एकमात्र राशि। आप उदीयमान राशि सिंह और इसके स्वामी ग्रह सूर्य की नैसर्गिक विशेषताओं और विशिष्ट गुणों से सम्पन्न होंगे। इस राशि की लाक्षणिक विशेषताएं पिता और जीवन शक्ति है। इस राशि का स्वामित्व शरीर के हृदय और पीठ के ऊपरी भाग पर है। आपको इनमें से किसी एक भाग के प्रभावित होने से कुछ समस्याएं हो सकती हैं। आपको सुनहरा पीला रंग पसन्द होगा, आपका भाग्यशाली रत्न माणिक है और आपका पसन्दीदा फूल ग्लेडियोलस है।

आपका दिमाग एक बढ़ते किशोर की तरह होगा– जो आशाओं और अभिलाषाओं से सम्पन्न होगा। बुरे दौर में भी आशावादी बने रहने की आपकी विलक्षण क्षमता आपको अपने समकालीनों से अलग बनाएगी। मुसीबत के समय लोगों की मदद करना और उनके स्तर को ऊँचा उठाने की आपकी अन्तर्निहित प्रकृति के कारण लोग आपको अपना प्रेरणा स्रोत मानेंगे।

आपका सकारात्मक पक्ष यह है, कि आप विश्वास व जोश से पूर्ण स्व–आश्वस्त प्रकृति के एक स्वतंत्र व्यक्ति होंगे। आपमें प्रतिष्ठा और गर्व की एक विकसित भावना होगी। आप मिलनसार होंगे– हमेशा प्रेम करने और बांटने वाले। जैसाकि आप जन्मजात आशावादी हैं, अतः आपने कभी भी हार स्वीकार करना नहीं सीखा होगा। थोड़ा आवेगी होने के बावजूद, सेवा भावना से शुरू किए गए कामों को आप सफलतापूर्वक पूर्ण करेंगे।

हालांकि, दूसरा पक्ष यह है, कि आप व्यर्थ के आवेगों से शासित स्वकेन्द्रित अहंवादी व्यक्ति होंगे। आप दिखावा करने और अनुमोदन के अत्यंत शौकीन हो सकते हैं। आपमें वास्तविकता को कल्पनाओं के साथ मिलाने की प्रवृत्ति हो सकती है और आसमान में नृत्य के बेतुके रोमांच का आनन्द लेने के लिए आप हवाई किले बनाना भी प्रारम्भ कर सकते हैं। आपको यह समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि यदि आप समय के साथ परिवर्तन को स्वीकार नहीं करते हैं, तो आपको अपनी कल्पना से भी पहले जीवन के कुछ कठिन दौर का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में संचालित ग्रहीय प्रभावों का एकत्रित प्रभाव और आपके द्वारा अपनी इच्छा–शक्ति के प्रयोग का

तरीका यह निर्धारित करेगा, कि आप कौन सा रास्ता चुनना पसन्द करेंगे और आपको उस पर चलने से वास्तव में किस प्रकार का परिणाम प्राप्त होगा।

जन्म कालिक होरा का फल :

आपकी कुण्डली में लग्न मेष राशि के प्रथम होरा में स्थित है– जो कि सिंह होरा के समकक्ष है। इस युति के कारण आपका कद लम्बा और व्यक्तित्व ओजपूर्ण होगा। लेकिन आपका मिजाज गर्म हो सकता है और आपको बदमाश किस्म के लोगों की संगति पसन्द हो सकती है। आपमें अनावश्यक रूप से इधर–उधर देखने की विशेष आदत हो सकती है, और आप यह मान सकते हैं कि आप दूसरों से अधिक चालाक हैं।

जन्म कालिक द्रेष्काण का फल :

आपकी कुण्डली में, लग्न सिंह राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित है– जो स्वयं सिंह द्रेष्काण के समकक्ष है। इस योग के कारण, आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपमें आत्मसम्मान की प्रबल भावना, गर्व की उन्नत अनुभूति, ऐश्वर्यपूर्ण मिजाज और गौरवशाली स्वभाव होगा। इतने सारे निरर्थक लोगों के बीच एक आम इंसान बनकर रहना आपको अत्यंत प्रतिघाती प्रतीत होगा, कि आप स्वयं को सबसे विशिष्ट बनाने की कोशिश में एक अज्ञात मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं। अपनी विशिष्ट प्रतिभा के कारण आप काफी कम आयु में पहचान प्राप्त करेंगे, लेकिन जीवन में आपकी मंजिल और गगनचुम्बी अपेक्षाएं एक दूसरे से बिल्कुल विपरीत दिशा में होने के कारण, आप अकेले ही एक जीवन के नीरस रेगिस्तान को पार करेंगे।

जन्म कालिक प्राणपद का फल :

आपकी कुण्डली में, प्राणपद तीसरे भाव (विक्रम–भाव) में स्थित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत कुछ मामलों में बहुत अनुकूल नहीं हैं। आप दंभी प्रकृति और हिंसक प्रवृत्ति वाले कठोर हृदय के व्यक्ति हो सकते हैं। आप स्वच्छतारहित हो सकते हैं और अपने परिधान, व्यक्तित्व व वातावरण के प्रति बहुत लापरवाह हो सकते हैं। आप अपने बड़ों, शिक्षकों और/या वरिष्ठों का सम्मान नहीं कर सकते हैं।

जन्म कालिक गुलिक का फल :

आपकी कुण्डली में, गुलिक नौवें भाव (धन–भाव) में स्थित है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप अनेक कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं तथा आपके कुछ प्रयासों को वांछित सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। आप अपने बड़ों और उपदेशकों के प्रति सम्मान का भाव नहीं रख सकते हैं और परम्पराओं व मान्यताओं के प्रति बिल्कुल भी आदर नहीं हो सकता है। आप अपने पिता के संदर्भ में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं और आपकी संतान भी काफी अयोग्य हो सकती हैं।

जन्म कालिक गण का फल :

देव गण नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप आकर्षक व्यक्तित्व, सुन्दर स्वरूप, मनोहारी बर्ताव और उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आप ईश्वर के प्रति समर्पित, बड़ों, शिक्षकों व उपदेशकों के प्रति श्रद्धापूर्ण होंगे। आपकी आवाज सुरीली और वचन मधुर होंगे। आपकी भूख कम होगी और आप सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। आप धनी और सद्गुणी होंगे। आप दूसरों की योग्यताओं की प्रशंसा करने और सद्गुणों को सुनने में भी सक्षम होंगे।

जन्म कालिक वर्ण का फल :

क्षत्रिय वर्ण नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप आध्यात्मिक विकास की दूसरी श्रेणी से सम्बद्ध होंगे, आप बहुत अभिमानी और अक्खड़ प्रकृति के हो सकते हैं एवं अहं की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। यद्यपि आप शिक्षकों व उपदेशकों के प्रति सम्मानपूर्ण होंगे, फिर भी आप शारीरिक शक्ति और भौतिक अधिग्रहणों से अधिक प्रभावित होंगे। आपका शरीर बलिष्ठ हो सकता है एवं मार्शल आर्ट सीखने में आपकी गंभीर रूचि हो सकती है। अपनी साहसिक भावना के कारण आप संघर्षों एवं लड़ाइयों के शौकीन होंगे, एवं खेलों व बाह्य गतिविधियों में उत्तम कार्य करेंगे। आप धनवान होंगे, किन्तु आपमें दूसरों के साथ विवाद में उलझने की प्रवृत्ति हो सकती है। आप अपने शत्रुओं के प्रति निर्दयी हो सकते हैं, किन्तु अपने मित्रों के प्रति उदार होंगे एवं गरीब व दबे–कुचले लोगों के प्रति दयालु होंगे।

कुण्डली में लागू होने वाले ग्रह योग (ग्रहयुति)

कुण्डली में लागू होने वाले महत्वपूर्ण योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश और द्वादशेश परस्पर केन्द्रीय भावों अर्थात लग्न, चौथे, सातवें और दसवें में स्थित हैं– जबकि एक या अधिक मित्र ग्रहों की इन पर दृष्टि है। यह समग्र योग अत्यंत शुभ है तथा इसे पर्वत योग (विद्यानाथ के जातक परिजात के अनुसार) कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप बहुत भाग्यशाली, प्राचीन धार्मिक ग्रंथों और पवित्र शास्त्रों के ज्ञाता, वाक्पटुता से सम्पन्न एवं परोपकारी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होंगे। इसके अतिरिक्त, आप गौरवशाली एवं प्रसन्नचित्त होंगे तथा शहर/कस्बे/गांव/समाज में बहुत महत्वपूर्ण व अत्यंत सम्मानित व्यक्ति होंगे।

आपकी कुण्डली में, चतुर्थेश शक्तिशाली है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपनी राशि में है। इसके अतिरिक्त, इस पर लग्नेश की दृष्टि पड़ रही है। समग्र रूप से इस अत्यंत अनुकूल योग को काहल योग (विद्यानाथ के जातक परिजात के अनुसार) कहा जाता है। इस योग के साथ जन्म लेने के कारण, आप बहुत उर्जावान, चतुर और साहसी होंगे। आप अधिकार और शक्ति वाला पद प्राप्त करेंगे तथा एक आबंटित क्षेत्र में शासकीय व्यक्ति होंगे। आप एक पुलिस अधिकारी/उप प्रभागीय न्यायाधीश/तहसीलदार/जिलाधीश हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश तीसरे, छठें, आठवें और बारहवें भाव के अलावा अन्य किसी भाव में स्थित है, नवमेश का राशिपति नौवें भाव में स्थित है। इस बहुत अनुकूल परिवर्तन योग को महा योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस शुभ योग की उपस्थिति के कारण, धन की देवी आप पर कृपा बरसाएंगी और आप अधिकारियों व राज्य से सम्मान तथा लाभ प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतान, संबंधी और मित्रों के साथ आरामदायक व आधुनिकतापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। समाज में आप बहुत सम्मानित होंगे और आपकी विश्वसनीयता, सम्मान, यश व प्रतिष्ठा में हमेशा वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, नैसर्गिक शुभ ग्रह चौथे भाव से संबद्ध है या उसकी इस पर दृष्टि है। चतुर्थेश किसी अनुकूल भाव (त्रिक भावों– छठे, आठवें और बारहवें भाव के अलावा) में स्थित है तथा यह अपनी उच्च राशि या अपनी राशि में भी स्थित है। समग्र रूप से यह अत्यंत अनुकूल योग का निर्माण करता है, जिसे जलधि योग कहते हैं। (या फिर इसको अम्बुधि योग भी कहा जाता है।) आपकी कुण्डली में इस शुभ योग के मौजूद होने से आप एक सम्पन्न व्यक्ति होंगे। आप एक विशाल आवासीय भवन, कृषि भूमि और मवेशियों के स्वामी होंगे। आपको एक प्रतिष्ठापूर्ण पद प्राप्त होगा एवं दीर्घकालिक खुशियों का वरदान प्राप्त होगा। यहां तक कि उच्च पद और प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति भी आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। आप परोपकारी स्वभाव वाले होंगे और सामान्य लोगों की भलाई के लिए कुओं व जलाशयों का निर्माण करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग के होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह– जो कि उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है– आपके दूसरे भाव में स्थित है। द्वितीयेश या इसका नवांश–राशिपति एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है अथवा नीच या अस्त या ग्रसित होने के कारण कमजोर है अथवा लग्न कुण्डली या नवांश कुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है। इस प्रतिकूल योग को दुर्मुख योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका व्यक्तित्व आकर्षक नहीं हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपका स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है, बहुत जल्दी क्रोधित होने की प्रवृति हो सकती है और कठोर व अपशब्दों का प्रयोग कर सकते हैं– जिसके लिए आपके अपने लोग तक आपको बहुत नापसन्द कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश और चतुर्थेश नैसर्गिक संबंधों के अनुसार परस्पर मित्र हैं। इसके अतिरिक्त, इन दोनों की नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है या ऐसे ग्रह की इन पर दृष्टि पड़ रही है। वास्तव में यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ स्नेह योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपका अपनी माता (या इसी के समान संबंध वाला का कोई अन्य व्यक्ति) के साथ आत्मीय संबंध होगा तथा वह भी आपके साथ समान रूप से स्नेह भाव रखेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की चतुर्थेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की नवमेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे पितृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी पिता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरा भाव एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि में है और एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तीसरे भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि तृतीयेश का नवांश–राशिपति भी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। समग्र रूप से यह एक लाभकारी योग है, इसे सत कथादि श्रवण योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप एक पवित्र आत्मा वाले व्यक्ति होंगे, आपको प्राचीन शास्त्रों, धार्मिक ग्रन्थों और

दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने में रूचि होगी। आपको साधुजनों का दर्शन करने में भी गहन रूचि होगी तथा उनके धार्मिक प्रवचनों को आप बहुत ध्यान से सुनेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, नैसर्गिक अशुभ ग्रह अपनी स्थिति और दृष्टि से दूसरे भाव को प्रभावित कर रहे हैं, जबकि उसकी ना तो किसी के साथ युति है और ना ही किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की दृष्टि है। इसके अतिरिक्त द्वितीयेश पर एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की दृष्टि है और इसका नवांश–राशिपति भी ऐसा ही एक ग्रह है। समग्र रूप से यह एक प्रतिकूल योग है, जिसे विष प्रयोग योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप जानबूझकर या अनजाने में किसी जहरीले पदार्थ का सेवन कर सकते हैं अथवा किसी अन्य व्यक्ति की गलती के कारण गलत दवाइयों का सेवन कर लेने से बुरी तरह से पीड़ित हो सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले अरिष्ट योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि की चंद्रमा के साथ युति (या दृष्टि) है, जबकि मंगल की शुक्र के साथ युति (या दृष्टि) है तथा इन दोनों ग्रहों में से किसी के साथ अन्य किसी ग्रह की ना तो युति है और ना ही इन पर किसी की दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है– जिसे अरिष्ट योग कहते हैं। परिस्थितियों के कारण, आपको जीवन में कुछ परेशानियां हो सकती हैं। आपके घर में शांति व संतुष्टि का अभाव हो सकता है एवं आपको अपने जन्मस्थान पर उत्तम अवसर प्राप्त नहीं हो सकते हैं। आपको अपने पेशे के क्षेत्र में कठिन संघर्ष करना पड़ सकता है तथा आपका पद व आय असामान्य रूप से आपकी योग्यता से कम हो सकता है। अपने पेशे के संबंध में आपको कई बार अपना स्थान बदलना पड़ सकता है। आपको जीवन की सुख–सुविधाओं का अभाव हो सकता है और यदि कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में उपस्थित नहीं हैं, तो आपका विवाह नहीं हो सकता है या आपका वैवाहिक जीवन शांतिपूर्ण या खुशहाल नहीं हो सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले चन्द्र योग

आपकी जन्मकुण्डली में एक बहुत शक्तिशाली चंद्र–मंगल योग उपस्थित है। आपका जन्म एक समृद्ध परिवार में हुआ है और आप अपने प्रयासों को निर्देशित करके अपने धन व सम्पत्तियों में वृद्धि करेंगे। आप अपना स्वयं का एक स्वतन्त्र व्यवसाय अपना सकते हैं अथवा एक शक्तिशाली व अधिकारपूर्ण पद प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुभ चन्द्राधि योग उपस्थित है। आपका जन्म काफी सम्पन्न परिवार में हुआ है, आपका पालन–पोषण बहुत उत्तम होगा, अपने वरिष्ठों व अधिकारियों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे, सम्मानजनक पद प्राप्त करेंगे तथा आपके भाग्य में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में अनुकूल गज केसरी योग उपस्थित है। आपका जन्म काफी सम्पन्न परिवार में हुआ है, आपका पालन–पोषण बहुत उत्तम होगा, अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे, काफी स्थायी पद प्राप्त करेंगे तथा आपके भाग्य में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

कुण्डली में लागू होने वाले रवि योग

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह वेशि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग है। इस समग्र योग को शुभ–वेशि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप लम्बे कद और सम दृष्टि वाले होंगे। इसके अतिरिक्त, आप सत्यनिष्ठ और आशावादी दृष्टिकोण वाले होंगे। हालांकि, आप बहुत उर्जावान प्रवृत्ति के नहीं हो सकते हैं। यद्यपि आप बहुत धनी नहीं हो सकते हैं, फिर भी, आप अपने भाग्य से खुश रहेंगे तथा चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे।

कुण्डली में लागू होने वाले नभश योग

आपकी कुण्डली में केदार योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यद्यपि यह एक बहुत शुभ योग नहीं है, फिर भी आप कई मामलों में भाग्यशाली हो सकते हैं। हालांकि आप सत्यनिष्ठ होंगे एवं सदैव केवल अपने कार्यों से मतलब रखेंगे, लेकिन समझ के अभाव के कारण आप काफी अस्थिर–मिजाज वाले हो सकते हैं। यद्यपि आप खुले विचारों वाले एक साधारण व्यक्ति होंगे, फिर भी आप कुछ–कुछ बातुनी और हठी प्रतीत हो सकते हैं। आपके पेशे का कुछ संबंध कृषि, कृषि उत्पाद या कार्यान्वयन आदि से हो सकता है। हालांकि आपकी आय उत्तम होगी और आप सदैव दूसरों के लिए मददगार होंगे।

कुण्डली में लागू होने वाले धन योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक वायु तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से पश्चिम दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

Desktop Application

Professional Astrology Software

Red Astro 11

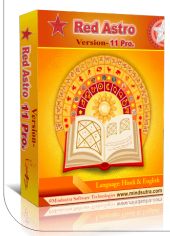

Language:
English & Hindi

Price:
M.R.P: ₹ 35,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

E-Kundali Prem. 10

Language:
English, Hindi & Telugu

Price:
M.R.P: ₹ 17,500/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Astro Health Scope

Language:
English & Hindi

Price:
M.R.P: ₹ 12,500/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Marriage Matching Prem.

Language:
English, Hindi & Telugu

Price:
M.R.P: ₹ 7,500/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Numerology 10

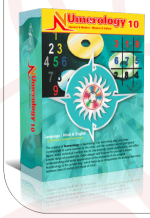

Language:
English & Hindi

Price:
M.R.P: ₹ 10,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Jaimini Light 10

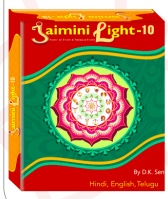

Language:
English, Hindi & Telugu

Price:
M.R.P: ₹ 5,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Bhrigu Naadi Astro

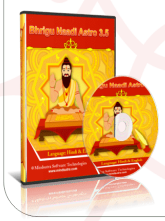

Language:
English & Hindi

Price:
M.R.P: ₹ 12,500/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

Lal-Kitab Vastu

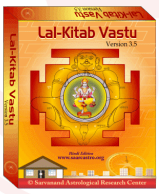

Language:
English & Hindi

Price:
M.R.P: ₹ 5,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

KP-Logy Advance

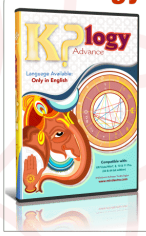

Language:
English

Price:
M.R.P: ₹ 6,000/-

Xp, Vista, Window 7, 8, Win 10 Pro. & Win 11 Pro. Above Compatible

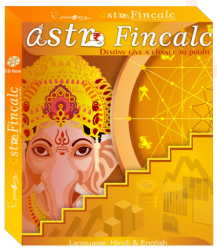

astro Fincalc

Destiny give a chance to profit

Website: www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

E-Mail ID: mindsutra@gmail.com

PH: 9818193410, 011-49043166, 9350247058

Click here to visit our website

Android Application

Professional Astrology Android Apps

Language:

English, Hindi

M.R.P: ₹ 2,500 (M.R.P:$ 35/-for Foreign customer)

Requires Android 2.3 and above

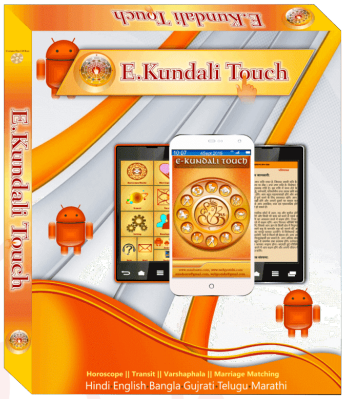

Language:

English, Hindi, Bangla, Gujrati, Telugu & Marathi

M.R.P: ₹ 3,500 (M.R.P:$ 50/-for Foreign customer)

Requires Android 2.3 and above

Language:

English, Hindi

M.R.P: ₹ 3,500 (M.R.P:$ 50/-for Foreign customer)

Requires Android 2.3 and above

Language:

English, Hindi, Bangla, Gujrati, Telugu & Marathi

M.R.P: ₹ 2,500 (M.R.P:$ 35/-for Foreign customer)

Requires Android 2.3 and above

Website: www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

E-Mail ID: mindsutra@gmail.com

PH: 9818193410, 011-49043166, 9350247058

Click here to visit our website

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, ww.webjyotishi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.webjyotishi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.